विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 48 : नई दिल्ली : 19-25 फरवरी 2021

१५७वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर

परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त धर्मसंघ के नाम संदेश

गणछत्र है मर्यादा पत्र

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।।

आज हम महामहिम जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का १५७वां वार्षिक मर्यादा महोत्सव दिवस मना रहे हैं। हमारे धर्मसंघ का प्रतिष्ठापन वि.सं. १८१७ आषाढ़ी पूर्णिमा को हुआ था। हमारे धर्मसंघ का प्रारम्भ हुए, प्रतिष्ठापन हुए २६० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और वर्तमान में २६१वां वर्ष चल रहा है। हमारे धर्मसंघ के प्रणेता, प्रवर्तक, प्रथम अनुशास्ता, प्रथम आचार्य जो भी उपयुक्त शब्द हो, वे महामना, परम श्रद्धेय, परम वंदनीय, महामति आचार्य भिक्षु रहे हैं। उनसे प्रवर्तित, संबद्ध हमारा यह जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ है। हम बाबा भिक्षु का स्मरण करते हैं कि उनसे शुरु हुआ हमारा यह धर्मसंघ हमारे लिए मानों कल्पतरु बना हुआ है। उसके साये में हम अपनी साधना कर रहे हैं।

आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण किया, अनेक लिखत निर्मित किए और वि.सं. १८५९ यानी उनके महाप्रयाण से कुछ महीनों पूर्व माघ शुक्ला सप्तमी के दिन का एक लिखत हमें प्राप्त है। (आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादा पत्र को दिखाते हुए) माघ शुक्ला सप्तमी के दिन लिखा गया यह लिखत हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह एक पत्र मानों कि प्रतीक के रूप में गणछत्र बना हुआ है। इस पत्र में लिखित मर्यादाओं की आत्मा हमारे लिए बहुत विशिष्ट रूप में सम्माननीय है।

प्रणति पूर्वाचार्यों के प्रति

आचार्य भिक्षु की उत्तराधिकार परंपरा आगे चली। प्रथम आचार्य परम पूज्य भिक्षु स्वामी हुए। उनके द्वारा मनोनीत उनके उत्तराधिकारी दूसरे आचार्य परम पूज्य भारमलजी स्वामी हुए। फिर उनके द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के तीसरे अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री रायचंदजी (ऋषिराय महाराज) हुए। फिर उनके द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य प्रज्ञा पुरुष श्रीमज्जयाचार्य हुए। आज हम जो मर्यादा महोत्सव मना रहे हैं, उसके प्रणेता श्रीमज्जयाचार्य थे। हम मानों कि उनके आभारी हैं। उनके द्वारा शुरु किया गया महोत्सव हम आज भी मना रहे हैं। यह महोत्सव मानों उनके द्वारा अवदान के रूप में दिया हुआ है। श्रीमज्जयाचार्य द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के पंचम आचार्य परम पूज्य श्री मघवागणी हुए। मघवागणी के द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के षष्ठ आचार्य परम पूज्य माणकगणी हुए। संघ द्वारा मनोनीत या संघ के प्रतिनिधि मुनिश्री कालूजी स्वामी (रेलमगरा) द्वारा घोषित हमारे धर्मसंघ के सप्तम आचार्य परम पूज्य श्री डालगणी हुए। डालगणी के द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के अष्टम आचार्य परम पूज्य श्री कालूगणी हुए। कालूगणी द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के नवम आचार्य परम पूज्य आचार्य तुलसी हुए। आचार्य तुलसी द्वारा मनोनीत हमारे धर्मसंघ के दशम अनुशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी हुए। इस प्रकार अतीत में आचार्यों का एक दशक हो चुका है। उन दस परम पूज्य आचार्यों ने हमारे इस जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की सुरक्षा की, इसे आगे बढ़ाया, व्यवस्था दी, अनुशासना दी। हम हमारे धर्मसंघ के दस महान पूर्वाचार्यों के प्रति प्रणत हैं, उन्हें वंदन करते हैं। उन्होंने जो सेवा दी, उनके प्रति एक प्रकार से आभार ज्ञापन करते हैं।

पान करें निष्ठापंचामृत का, अक्षुण्ण रहे त्रिआयामी एकता

हमारा धर्मसंघ कोई राजनैतिक संगठन नहीं है, मूलतः कोई सामाजिक संगठन भी नहीं है। हमारा धर्मसंघ मूलतः एक आध्यात्मिक संघ है, संगठन है। हम एक आध्यात्मिक संगठन के सदस्य हैं। जहां आध्यात्मिकता है, वहां आत्मकल्याण की बात होती है कि हमें अपनी आत्मा का कल्याण करना है, भवसागर से पार उतरने की साधना करना है, राग-द्वेष मुक्ति की साधना करना है। अध्यात्म की साधना हमारे धर्मसंघ का मूल है। अध्यात्म की साधना के लिए आत्मनिष्ठा का भाव होना अपेक्षित है। एक है आत्मा और दूसरा है शरीर, पदार्थ। हमारा आकर्षण आत्मा के प्रति अधिक है या बाह्य जगत, पदार्थों, भौतिकता के प्रति अधिक है, यह ध्यातव्य है। आत्मा के प्रति, आत्मकल्याण के प्रति आकर्षण है, वैराग्यभाव है तो मानना चाहिए कि हमारे में आत्मनिष्ठा है।

आत्मनिष्ठा का एक आदर्श सूत्र है-'आत्मा रा कारज सारसां, मर पूरा देसां।' प्राण भले जाएंगे, आत्मकल्याण की साधना करेंगे, यह हमारे लिए एक आदर्श सूक्त है। हम चारित्रात्माओं में विशेष रूपेण आत्मनिष्ठा का विकास रहना चाहिए, होना चाहिए। संघ भी आत्मकल्याण के प्रयोजन से है। आत्मकल्याण की साधना में सहयोग मिलने की संभावना धर्मसंघ में है, इसलिए हम इस धर्मसंघ के सदस्य बने हुए हैं।

आत्मनिष्ठा होनी ही चाहिए और चूंकि हमारी आत्मसाधना संघ में हो रही है तो संघनिष्ठा भी रहनी चाहिए। हमारे धर्मसंघ की एकता की तीन बातें हैं--एक आचार, एक विचार और एक आचार्य। हमारे धर्मसंघ की सभी चारित्रात्माओं में आचार की एक मान्यता, सिद्धांतों की एक मान्यता रहे, ऐसी व्यवस्था है। ऐसा नहीं कि बीस साधुओं की मान्यता यह है, पच्चीस की मान्यता वह है। हमारी संघीय मान्यता सिद्धान्तः एक रहती है, यह हमारी दूसरी एकता है। हमारी तीसरी एकता है हमारे धर्मसंघ में आचार्य एक होते हैं। ऐसा नहीं कि पचास साधु उस आचार्य के शिष्य, पच्चीस साधु इस आचार्य के शिष्य हैं। सब एक आचार्य के शिष्य व शिष्याएं हैं। हमारे संपूर्ण धर्मसंघ में सर्वोच्च नेतृत्व एक आचार्य का है। यह हमारे संघ की त्रिआयामी एकता है। हमारी यह एकता सुरक्षित रहे, अक्षुण्ण रहे।

संघ के प्रति भी हमारी निष्ठा रहे। स्थितियां, परिस्थितियां आ सकती हैं, कभी मनोनुकूल व्यवस्था मिले, कभी न भी मिले, कभी आचार्य का उलाहना भी मिल जाए, कभी अनुशासन भी कुछ कड़ा हो जाए, कोई बात नहीं। इनको सहन करें, पर छोटी बातों को लेकर संघ को छोड़ने का विचार कभी सपने में भी न आए, यह हमारे लिए काम्य है। संघ हमारा आश्रय है। अंतिम श्वास कभी सुखे-समाधे अच्छी साधना की भूमिका में इस संघ में ही आए, ऐसी संघनिष्ठा बनी रहनी चाहिए। तुच्छ बातों को लेकर मन में विचलन का भाव नहीं आना चाहिए। मेरा तो यह विचार है कि छोटी बातों को लेकर कोई संघ को छोड़ने की सोचता है, वैसा कदम उठाता है, वह एक प्रकार से अभागा व्यक्ति है। जो संघनिष्ठा वाला है, वह सौभाग्य वाला व्यक्ति है। कभी कोई इस रूप में अभागा न बने, यह काम्य है।

आज हम मर्यादा महोत्सव मना रहे हैं। हमारे धर्मसंघ में अनेक मर्यादाएं हैं। मैं सोचता हूं कि इतनी मर्यादाएं हैं, इतने ग्रन्थ हैं, मर्यादावली, अनुशासन संहिता, हजारी की बातें, लेखपत्र आदि में विभिन्न मर्यादाएं हैं, उन सबमें सबसे ऊंची मर्यादा कौन सी है? यों तो सापेक्ष बात हो सकती है, किन्तु एक अपेक्षा से मुझे ऐसा लगता है कि हमारे संघ की सभी मर्यादाओं की शिरोमणि मर्यादा है--'सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।' यह मानों मर्यादा शिरोमणि है। संघीय मर्यादाओं में यह सर्वोपरि है, ऐसा मेरा मानना है। आज्ञा में हैं तो मानों आश्रय मिला हुआ है। आचार्य की आज्ञा में रहने से काफी चीजों से बचाव हो सकता है।

आज्ञानिष्ठा के अनेक उदाहरण हो सकते हैं। युवाचार्य जीतमलजी आज्ञानिष्ठा के प्रसिद्ध उदाहरण हैं। उनके गुरु तत्कालीन आचार्यश्री रायचंदजी स्वामी के निर्देशन में युवाचार्य श्री जीतमलजी चतुर्मास करने के लिए बीदासर पहुंच गए। आषाढ़ का महीना था। आचार्यश्री रायचंदजी स्वामी का आदेश आया कि जीतमल तुम यह चतुर्मास बीकानेर में करो। गरमी के दिन थे, लू इतनी तेज चल रही थी कि दुपहरी में घर से बाहर निकलना एक साहस का ही काम हो रहा था। मार्ग में छोटे ग्रामों में अचित्त पानी का योग मिलना भी काफी दुष्कर था।

इन सब कठिनाइयों को सामने रखते हुए लोगों ने युवाचार्यश्री से वहीं चतुर्मास करने की प्रार्थना की। सहवर्ती साधुओं का मन भी विहार करने से कसमसा रहा था।

युवाचार्यश्री ने ध्यानपूर्वक सबकी बातें सुनीं और कहा--'तुम कहते हो वह सब ठीक है, पर गुरुदेव की जो आज्ञा है, वह तो इन सबसे ऊपर है। उसकी पूर्ति तो होनी ही चाहिए।'

उपस्थित लोगों में से किसी एक ने कहा--'आचार्यश्री की आज्ञा तो है, पर आप उसमें कोई गली निकालिये।'

युवाचार्यश्री ने तत्काल उसे टोकते हुए कहा--'यह तुम क्या कह रहे हो? गली तो कोई 'गोला' या कामचोर ही निकालता है। यह तो सद्गुरु की आज्ञा है, इसमें गली निकालने जैसी कोई बात नहीं होती।'

उन्होंने उस भयंकर गर्मी में भी वहां से आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को विहार कर दिया। युवाचार्यश्री तथा मुनि सरूपचंदजी आदि उस समय वे दस मुनि थे। गरमी के भयंकर कष्ट झेलते हुए वे आषाढ़ शुक्ला दसमी को बीकानेर पहुंच गए। एक दिन तो उस विहार में उन्हें जल के अभाव में तृषा का मरणांत-सदृश कष्ट भी उठाना पड़ा।

मैं इस बात पर विचार करूं तो मुझे लगता है कि हम सबके लिए युवाचार्यश्री जीतमलजी का यह घटना प्रसंग एक सन्देश है कि गुरु की आज्ञा के प्रति कितनी जागरूकता रखी। हालांकि मैं तो यह भी कहता हूं कि स्वास्थ्य आदि की दिक्कत हो तो मुझे बता दिया करो, चतुर्मास मैंने कह दिया, फिर भी किसी के स्वास्थ्य की अनुकूलता न हो तो वे मुझे बता दें, मैं उस पर ध्यान दे सकता हूं।

साधु-साध्वियों से कहना चाहूंगा कि बड़ों की आज्ञा से जो कार्य होता है, उसका महत्त्व है। आज्ञा के विरुद्ध किए गए कार्य का महत्त्व नहीं होता।

मुझे गौरव है मेरे धर्मसंघ पर

मुझे मेरे धर्मसंघ पर गौरव है कि हमारे साधु-साध्वियों में आज्ञा के प्रति कितना सम्मान का भाव है और समणश्रेणी व श्रावक समाज में भी आज्ञा के प्रति सम्मान का भाव है। हालांकि श्रावक समाज के साथ हमारा आज्ञा, निर्देश का इतना सीधा संबंध नहीं है, फिर भी जहां-जहां संबंध है, वहां-वहां श्रावक समाज में भी गुरु इंगित, निर्देश के प्रति जो निष्ठा है, मैं उस पर नाज करता हूं। मेरी ओर से नजर तो न लगे, इसलिए 'णमो अरहंताणं' बोल रहा हूं, किन्तु जो आज्ञानिष्ठा हमारे धर्मसंघ में देख रहा हूं, वह आत्मसंतोष के काबिल है। यह निष्ठा बनी रहे और यथा अपेक्षा पुष्ट होती रहे।

हम संघ में रहकर आचार का पालन करने वाले हैं। सर्व साधु-साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करें-यह हमारा मूल आचार हैं। हमारे पांच महाव्रत हैं, ये पांच हीरे हैं। इन्हें मूल्यवान हीरे भी कहा जा सकता है अथवा इन्हें अमूल्य हीरे भी कहा जा सकता है। जिन्हें ये पांच हीरे प्राप्त हैं, वे दुनिया के कितने धनाढ्य व्यक्ति हैं। जिसके पास महाव्रतों के पांच हीरे हैं, उसके सामने अरबपति, खरबपति लोग भी बहुत छोटे हैं। चारित्रात्माएं पांच महाव्रतों के पालन के प्रति जागरूक रहें। पांच समितियां और तीन गुप्तियां इन महाव्रतों की सुरक्षा करने वाली हैं, उनका भी अच्छी तरह पालन होता रहे।

हमारे संघ में प्राचीन मर्यादाएं हैं और नई मर्यादाएं भी बनती हैं। मर्यादाओं के प्रति भी हमारे मन में सम्मान का भाव रहे। हमारी मर्यादा है--'विहार-चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।' इस मर्यादा का कितना बड़ा सम्मान साधु-साध्वियां करते हैं। कहीं विहार करना है, चतुर्मास करना है तो आज्ञा के बिना चतुर्मास कौन कर सकता है। गीत का पद्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है--

गुरु आज्ञा जहां बड़ी है, बन पहरेदार खड़ी है।
आज्ञा बिना हिले क्यों पान, मिला यह तेरापंथ महान।
हमारे भाग्य बड़े बलवान, मिला यह तेरापंथ महान।
करने जीवन का कल्याण, मिला यह तेरापंथ महान।।

हमारे धर्मसंघ की मर्यादा है--अपना-अपना शिष्य-शिष्याएं न बनाएं। कोई भी साधु-साध्वी अपना-अपना व्यक्तिगत शिष्य-शिष्या न बनाए। यह मर्यादा कितनी उत्तम रूप में है। दुनिया का कोई भी व्यक्ति यह बता दे कि आपके संघ में अमुक साधु के इतने शिष्य हैं। मुझे मुश्किल लग रहा है कि कोई यथार्थवादी यह बात प्रस्तुत कर सके अर्थात हमारी यह मर्यादा कितनी आत्मगत हो चुकी है कि कौन सोचता होगा कि मैं अपने शिष्य/शिष्याएं बनाऊं।

हमारी एक और मर्यादा है--'आचार्य योग्य व्यक्ति को दीक्षित करे, दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।' दीक्षा योग्य व्यक्तियों की हो। केवल संख्याबल ही हमारा लक्ष्य नहीं होना चाहिए। संख्या अच्छी है, किन्तु संख्या गुणवत्तायुक्त हो, यह काम्य है। मुझे इस पर भी नाज है कि हमारे यहां दीक्षाएं लगभग तो पूर्व भूमिका के आधार पर होती हैं, मुमुक्षु बहनें संस्था में रहती हैं और मुमुक्षु पुरुष संतों के आसपास रहते हैं। हम आत्मसंतोष कर सकें, ऐसी हमारी दीक्षा की सुन्दर प्रक्रिया है। यानी योग्यता पर ध्यान दिया जा रहा है।

हमारी मर्यादा है--'आचार्य गुरु भाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुने, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।' यह मर्यादा भी कितने अच्छे रूप में पालित हो रही है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने परम पूज्य महाप्रज्ञजी को अपना उत्तराधिकारी बनाया, संघ ने उन्हें स्वीकार किया। आज का हमारा यह मर्यादा महोत्सव का समारोह हमें मर्यादा आदि के प्रति जागरूकता की प्रेरणा देने वाला है।

आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, आचारनिष्ठा और मर्यादानिष्ठा--यह निष्ठापंचामृत है, हम इसका पान करते रहें, हमारे में इसके संस्कार रहें।'

'अनुशासन संहिता : चारित्रात्मा समुदाय' का नवीन संस्करण

साधु-साध्वियों के लिए मर्यादाएं हैं, व्यवस्थाएं है। बहुत वर्षों से मैं देख रहा हूं कि मर्यादावली बनी हुई है। उसमें संशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन भी हो जाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के समय मर्यादावली के सिवाय 'अनुशासन संहिता' का भी निर्माण हुआ था। बाद में मैंने उसमें संशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन भी किया। मेरे हाथ में 'अनुशासन संहिता : चारित्रात्मा समुदाय (जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ)' है। सन् २०१६ में इसका नया संस्करण आया था। करीब पांच वर्षों बाद अब यह सन् २०२१ में परिवर्तित, परिवर्धित संस्करण आया है। मैं साधु-साध्वियों को यह सूचना दे रहा हूं कि हमारे धर्मसंघ की चारित्रात्माओं के लिए अनुशासन संहिता का यह सन् २०२१ का नया संस्करण है। (आचार्यप्रवर ने अनुशासन संहिता के प्राक्कथन का वाचन करते हुए यह सूचना भी दी कि १६ फरवरी २०२१ के १.०० ए.एम. से अनुशासन संहिता : चारित्रात्मा समुदाय का पूर्व संस्करण निरस्त तथा नवीन संस्करण (सन् २०२१) जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की चारित्रात्माओं के लिए लागू किया गया है।)

श्रावक संदेशिका के पालन के प्रति सजग रहे श्रावक समाज

श्रावक समाज के लिए 'श्रावक संदेशिका' पुस्तिका है। गत वर्ष उसका नया संस्करण भी आ गया था। श्रावक समाज के लिए जो मर्यादा, व्यवस्था है, उसके प्रति भी श्रावक समाज की जागरूकता बनी रहे।

नाज है संघीय संस्थाओं पर

हमारे धर्मसंघ से जुड़ी हुई कई संस्थाएं भी हैं। कितनी केन्द्रीय संस्थाएं हैं, स्थानीय संस्थाएं भी हैं। इस प्रकार कई संघीय संस्थाएं हैं। संस्थाएं चूंकि समाज से जुड़ी हुई हैं तो उनमें सामाजिकता भी हो सकती है, उनमें आर्थिक बात भी हो सकती है। संस्थाओं के लिए मेरा यह उपदेश, संदेश रहता है कि आर्थिक शुचिता के प्रति जागरूकता रहे, नैतिकता के प्रति जागरूकता रहे। अनुदान, चंदा जो भी आए उसमें अशुचिता न हो, अनैतिकता न हो। पैसा भले कम आए, किन्तु अशुचिता न हो। हिसाब-किताब में कहीं गड़बड़ न हो। दो नंबर का कहीं काम ही न रहे। ऐसी जागरूकता का प्रयास इन संस्थाओं से जुड़े व्यक्तियों में रहना चाहिए कि हम नैतिकता को महत्त्व देते रहें, ताकि आर्थिक अशुचिता न आए। कहीं भवन आदि बनाएं, वहां भी सरकार,

प्रशासन के नियमों के विरुद्ध कार्यों से बचने का यथासंभव प्रयास इन सभी संस्थाओं को रखना चाहिए। हमारे धर्मसंघ से जुड़ी हुई इन संस्थाओं के प्रति भी मुझे नाज हो रहा है कि कितनी अच्छी संस्थाएं तेरापंथ समाज के पास हैं। कितनी अनुशासित, व्यवस्थित संस्थाएं हैं। ये आध्यात्मिक-धार्मिक कार्य भी करती हैं। ये संस्थाएं भी अपना आध्यात्मिक-धार्मिक विकास करती रहें और नैतिकता के प्रति जागरूकता बनी रहे।

संस्थाओं के द्वारा अनेक गतिविधियां चलाई जा रही हैं। ज्ञानशाला छोटे-छोटे बच्चों के विकास का एक माध्यम है। ज्ञानशालाओं का बहुत सुन्दर नेटवर्क है। मैं श्रद्धा के क्षेत्रों में जाता हूं तो ज्ञानशाला के बच्चे भी प्रस्तुतियां करते हैं। मुझे अच्छा लगता है कि धर्मसंघ के श्रावक समाज के बच्चों को अच्छे संस्कार देने का प्रयास हो रहा है। उनका धार्मिक ज्ञान बढाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार ज्ञानशाला एक सुन्दर उपक्रम है, उसका आध्यात्मिक-धार्मिक विकास होता रहे। ज्ञानशालाओं की संख्या बढ़े और ज्ञानार्थी बच्चों की भी संख्या बढ़े। जहां ज्ञानशालाएं नहीं हैं और होने की संभावना है, वहां ज्ञानशाला के प्रारम्भ का प्रयास होना चाहिए। ज्ञानार्थियों की संख्या बढ़ सके तो वैसा प्रयास भी होना चाहिए।

उपासक श्रेणी बहुत काम की श्रेणी है, बहुत उपयोगी श्रेणी है। इसे प्रचारक के रूप में कह दें, धर्म को फैलाने वाली श्रेणी कह दें, बहुत अच्छी श्रेणी है। उपासक श्रेणी का भी विकास होता रहे। संख्या का भी विकास होता रहे और ज्ञान आदि गुणवत्ता का भी विकास होता रहे।

हमारे यहां मुमुक्षु श्रेणी भी है। उसमें पुरुष भी होते हैं और बाइयां भी हैं। बाइयों की संख्या ज्यादा है। मुमुक्षुओं की संख्या बढ़नी चाहिए। हमारे साधु-साध्वियां, समण-समणियां जहां जाएं, प्रयास करें कि मुमुक्षुओं की संख्या बढे। गुणवत्ता तो बढ़नी ही चाहिए, साथ में संख्यावृद्धि पर भी ध्यान दिया जाता रहे।

समणश्रेणी भी है। इस बार यहां समणियां बहुत कम हैं। समणश्रेणी भी अपनी आचार व्यवस्था के प्रति जागरूक रहे, खूब अच्छी साधना करती रहे, विकास करती रहे।

हमारे संघ द्वारा अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसे लोक कल्याणकारी उपक्रम संचालित किए जा रहे हैं। उनका भी कार्य अच्छा चलता रहे। इन गतिविधियों से जुड़ी हुई संस्थाएं जागरूक रहें कि इनका समुचित विकास हो। इस प्रकार हमारा धर्मसंघ चारित्रात्माएं, समणश्रेणी, श्रावक-श्राविकाएं, संस्थाएं सब आध्यात्मिक-धार्मिक विकास करते रहें।

अहिंसा व मैत्री की नीति पर बढते रहें

हमारा विश्वास अहिंसा में रहे, मैत्री में रहे। हम धार्मिक-आध्यात्मिक संगठन के सदस्य हैं। हमारी श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास अहिंसा के प्रति रहे, मैत्री के प्रति रहे। व्यर्थ वैर-विरोध, निन्दा-आलोचना, आक्षेप-प्रक्षेप आदि में रुचि न लें। कार्य अच्छा करते रहें। सबके प्रति हमारी मैत्री रहे। हम अहिंसा की नीति पर, मैत्री की नीति पर बढ़ते रहें।

पिछले मर्यादा महोत्सव के बाद एक वर्ष हो गया है। इस एक वर्ष के दौरान परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी का वर्ष संपन्न हुआ। हालांकि जैसी योजना थी कि हैदराबाद में जाकर समापन करेंगे, वह तो नहीं हो सका, किन्तु अपने ढंग का कार्यक्रम हो गया। कोरोनाकाल में जो विधा उपयोगी हो सकती थी, उस विधा से आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी 'ज्ञान चेतना वर्ष' का समापन हो गया। गुरुदेव का साहित्य भी सामने आ गया। कुल मिलाकर मुझे काफी संतोष है कि गुरुदेव की जन्म शताब्दी के लिए हमारे धर्मसंघ के द्वारा जितना कुछ हम कर सके, धर्मसंघ ने करने का प्रयास किया। एक प्रकार से हम उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करने में सफल हो गए हैं।

इस बार कोरोनाकाल भी आ गया। हम कोरोना के प्रति भी कोई द्वेष की भावना न रखें। अभय एवं समता की भावना रहनी चाहिए, हमें अपनी साधना में रहना चाहिए। हमारे कई साधु-साध्वियां इस अवधि में कालधर्म को प्राप्त हो गए, उनकी स्मृतिसभा भी मैं नहीं कर पाया हूं, वह भी कभी करना है। फिर भी पिछले मर्यादा महोत्सव के बाद जिनकी स्मृतिसभा नहीं हो सकी, आगे यथासंभव मुझे करना भी है, उन सभी चारित्रात्माओं के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।'

चारित्रात्माओं के लिए नवीन व्यवस्थाएं

हम सभी चारित्रात्माओं का धर्म है कि हम अपनी साधना करते रहें। मैं मुख्यतया चारित्रात्माओं की चर्या के विषय कुछ बातें बता रहा हूं--

- हमारी एक प्राचीन परंपरा है--लोच। उसका आगम में भी उल्लेख है। कोई स्थिति-परिस्थिति हो सकती है कि लोच करने में कठिनाई हो। भले शारीरिक स्थिति हो, कुछ मानसिक स्थिति हो, उस समय लोच का विकल्प काम में लेने की स्थिति हो सकती है। कोई भी चारित्रात्मा मस्तक के लोच का विकल्प काम में ले तो उसके लिए यह व्यवस्था रहे--लोच के विकल्प के रूप में कोई मुंडन करे या किसी दवाई आदि से केशापनयन करे, ऐसा कुछ भी करे तो छह बार ऐसा करने पर उस चारित्रात्मा को दो मासिक छेद प्रायश्चित्त आ सकेगा। पांच बार तक तो तप आदि प्रायश्चित्त दिया जा सकेगा, किन्तु छठी बार वैसा काम पड़ जाए तो उस चारित्रात्मा को द्विमासिक छेद प्रायश्चित्त का पात्र माना जा रहा है।
- हम पुरुष चारित्रात्माओं के मुंह का लोच भी होता है। वर्ष में पांच बार भी हो सकता है, कोई और भी ज्यादा कर सकते हैं। मुंह का लोच कुछ कठिन हो सकता है। किसी के कोई तकलीफ भी हो सकती है। कोई पुरुष चारित्रात्मा मुंह के लोच के विकल्प का प्रयोग कर केशापनयन करे तो छह बार ऐसा काम पड़ने पर द्विमासिक छेद प्रायश्चित्त आ सकेगा। उसके बाद फिर छह बार काम पड़ गया तो उसे दुबारा द्विमासिक छेद प्रायश्चित्त दिया जा सकेगा। समीक्षा परिषद में चिन्तन के बाद हमने लोच के बारे में जो निर्णय किया, उसे आज मैंने धर्मसंघ को खुले रूप में बता दिया है।
- गर्मी और सर्दी के मौसम को सहन करना किसी-किसी के लिए मुश्किल हो सकता है। बंद मकान हो, फिर मच्छर हों, ऐसी स्थिति में गर्मी को सहन करना मुश्किल कार्य हो सकता है। वर्तमान में रात्रि में दस बजे से पांच बजे तक का समय पंखे की दृष्टि से निषिद्धकाल है। किसी स्थिति में या दुर्बलतावश रात्रि में निषिद्धकाल में यदि चारित्रात्माएं पंखे का उपयोग करें तो १२० रात्रियों तक पंखे का उपयोग करने पर वे एकमासिक छेद प्रायश्चित्त के पात्र बन सकेंगे। किसी के काम न पड़े तो अच्छा है, किन्तु किसी के कभी काम पड़े तो उसे अपना लिखित रूप में नोट रखना चाहिए कि कब-कब काम पड़ा। कई वर्षों में १२० रात्रियां हो जाएं तो भी संबद्ध चारित्रात्मा छेद प्रायश्चित्त की पात्र बन सकेगी। फिर कभी १२० रात्रियों का काम पड़ गया तो पुनः वह चारित्रात्मा एकमासिक छेद प्रायश्चित्त की पात्र बन सकेगी।
- इसी प्रकार लू आदि की स्थिति में एसी, कूलर की अपेक्षा पड़ जाए तो तीस अहोरात्र तक एसी, कूलर का काम पड़ जाए तो उस चारित्रात्मा को भी एकमासिक छेद प्रायश्चित्त आ सकेगा। इसी तरह सर्दी में हीटर का काम पड़ जाए तो ३० अहोरात्र तक हीटर का प्रयोग करने पर एकमासिक छेद प्रायश्चित्त आ सकेगा। यह संख्या संलग्न रूप में भी हो सकती है और अनेक वर्षों की मिलाकर भी हो सकती है। भले सम सामाचारी में हो या भिन्न सामाचारी में, ऐसा काम पड़ने पर वह प्रायश्चित्त आ सकेगा। इतना-सा अपवाद है कि किसी राष्ट्रपति भवन आदि में गए, वहां एसी आदि सहज में चल रहा था, उसे गिनती में न लिया जाए। कोई चारित्रात्मा हॉस्पिटल में गए या भर्ती हुए, वहां कोई पंखा, एसी आदि चलते हों, उसे गिनती में न लिया जाए।

  छेद प्रायश्चित्त उसी चारित्रात्मा को आए, जिसके संदर्भ में पंखा चले, ए.सी. चले। किसी को परिचर्या के लिए पास रहना पड़ा, सोना पड़ा, वह अलग बात है। ए.सी., कूलर का दिन भर में आधा घंटा भी उपयोग हो जाए तो उसे गिनती में आधा दिन मान लिया जाए। उसी प्रकार रात में आधा घंटा भी उपयोग हो जाए तो उसे गिनती में आधा दिन मान लिया जाए। केवल दिन या केवल रात में चले तो उसे गिनती में आधा-आधा दिन माना जाए।
- सेवा आदि संघीय अपेक्षा के सिवाय कोई भी चारित्रात्मा १२० दिन व्हीलचेयरनुमा साधन, व्हीलचेयर, रेहड़ी या तत्सदृश का उपयोग करे तो उस उपयोग करने वाली चारित्रात्मा को एकमासिक छेद प्रायश्चित्त दिया जा सकेगा।

प्रवास स्थल व प्रवास स्थल परिसर में कोई व्हीलचेयर का उपयोग करे, वह गिनती में नहीं है। कोई यह कहे कि मुझे तो बोझ रखने के लिए साधन चाहिए। बोझ रखने के लिए भी जिसके निमित्त साधन चले, १२० दिन का प्रयोग होने पर उसे भी एकमासिक छेद का प्रायश्चित्त दिया जा सकेगा। किसी एक के लिए साधन चले, उसमें कोई दूसरा भी बोझ रखे तो जिसके बोझ के लिए वह साधन चले, उसे ही प्रायश्चित्त दिया जा सकेगा, दूसरे को नहीं।

ये जो मैंने चर्या संबंधी बातें बताई हैं, ये सब अभी अनिश्चितकालीन हैं। इनमें पुनर्विचार, संशोधन, परिवर्तन, निरसन का अवकाश है।

लोच का विकल्प, एसी, कूलर, हीटर, पंखे की व्यवस्थाएं १ मार्च २०२१ के १.०० पी.एम. से लागू मानी जाएं। साधन की व्यवस्था १ जनवरी २०२३ के १.०० पी.एम. को लागू होने वाली मानी जाए।

- एक और व्यवस्था बताना चाहता हूं, जो चारित्रात्माओं से भी संबंधित है और श्रावक समाज से भी संबंधित है। वह है कासीद की व्यवस्था। हम चारित्रात्माएं विहार आदि करते हैं तो साथ में कासीद भी रहते हैं। कासीद के विषय में मेरा यह कथन है कि एक कासीद लम्बेकाल तक एक सिंघाड़े आदि के साथ नहीं रहना चाहिए। उसकी व्यवस्था इस प्रकार रहे--एक वर्ष में अर्थात् मृगशिर कृष्णा एकम से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक कोई कासीद साठ दिन भी किसी सिंघाड़े आदि के साथ में (भले आठ माह) रह जाए। वे चारित्रात्माएं अगले चार वर्ष तक वापस उस कासीद की सेवा न लें। चार वर्ष का अंतराल कम से कम बीच में रहना चाहिए। मैं तो साधु-साध्वियों से कहूंगा कि जो कासीद एक बार एक वर्ष रह गया या कम से कम साठ दिन भी रह गया तो आगामी चार वर्षों तक पुनः उसकी सेवा न लें, यह चारित्रात्माएं स्वयं ध्यान रखें। विशेष स्थिति आ जाए तो हमें (आचार्यप्रवर को) निवेदन करा दें। यह व्यवस्था साधु-साध्वियों के लिए है, किन्तु साध्वीप्रमुखाजी इस व्यवस्था से मुक्त रहें। इस बार भी जिन सिंघाड़ों आदि में जो कासीद हैं, वे यदि साठ दिन भी रह गए हों तो वि.सं. २०७८ की कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के बाद अगले चार वर्षों तक उन सिंघाड़ों आदि में काम नहीं आ सकेंगे।'

दीक्षाओं की घोषणा

- २८ मई २०२१ को उज्जैन में ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीय को दीक्षा समारोह करने का भाव है, उसमें समण सिद्धप्रज्ञजी को मुनि दीक्षा का (श्रेणी आरोहण) देने का विचार है। मुमुक्षु मुकेश भटेवड़ा (छापली) और मुमुक्षु अनुप्रेक्षा चौपड़ा (बालोतरा) को भी उसी समारोह में मुनि दीक्षा देने का भाव है। ये सभी साधु प्रतिक्रमण सीखने का यथापेक्षा प्रयास रखें।
- एक दीक्षा समारोह मैं हमारी यात्रा के बीच करना चाहता हूं। चैत्र शुक्ला एकादशी अर्थात् २३ अप्रेल २०२१ को दीक्षा समारोह करने का भाव है। हम उस दिन जहां भी रहेंगे, वहां दीक्षा समारोह हो सकेगा। उस दिन मुमुक्षु स्नेहा बरड़िया (जामनेर) को साध्वी दीक्षा देने का भाव है, वह साधु प्रतिक्रमण सीखना शुरू कर सकती है।
- भीलवाड़ा में विकास महोत्सव के दिन अर्थात् भाद्रव शुक्ला नवमी तदनुसार १५ सितम्बर २०२१ के दिन दीक्षा समारोह करने का भाव है। उसमें समणी शीलप्रज्ञाजी को साध्वी दीक्षा (श्रेणी आरोहण) देने का मैंने पहले ही कह दिया है। मुमुक्षु सुरभि जैन (पंचकूला), मुमुक्षु पूजा बुरड़ (बायतू) और मुमुक्षु पूजा वडेरा (जसोल) को भी उस दीक्षा समारोह में साध्वी दीक्षा देने का भाव है। वे भी साध्वी प्रतिक्रमण सीखना शुरू कर सकती हैं।
- भीलवाड़ा में ही कार्तिक कृष्णा षष्ठी तदनुसार २७ अक्टूबर २०२१ को एक और दीक्षा समारोह करने का भाव है, उसमें मुमुक्षु प्रेक्षा संचेती (दिल्ली) को साध्वी दीक्षा देने का मैंने पहले ही कह दिया है।

ये सभी दीक्षा समारोह प्रातः करीब नौ बजे के आसपास शुरु हो सकेंगे। कभी यत्किंचित विलंब भी हो सकता है।

चतुर्मासिक और मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवेश और प्रस्थान

- भीलवाड़ा में आषाढ़ शुक्ला नवमी तदनुसार १८ जुलाई २०२१ को प्रातः लगभग ९.२१ बजे चातुर्मासिक प्रवास स्थल में प्रवेश करने का भाव है तथा चतुर्मास के बाद भीलवाड़ा से मृगशिर कृष्णा एकम २० नवम्बर २०२१ को प्रातः करीब ७.५१ बजे विहार करने का भाव है।
- बीदासर में माघ शुक्ला चतुर्थी तदनुसार ४ फरवरी २०२२ को प्रातः करीब ९.५१ बजे मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवास स्थल में प्रवेश करने का भाव है और १८ फरवरी २०२२ फाल्गुन कृष्णा द्वितीया को प्रातः करीब ८.१५ बजे वहां से प्रस्थान करने का भाव है।

मंगलकामना

आज माघ शुक्ला सप्तमी है। हमारे धर्मसंघ के एक संत शासनश्री मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी की दीक्षा के पचहत्तर वर्ष संपन्न हो रहे हैं। मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी वृद्धावस्था में हैं। मैं उन्हें गुरुदेव तुलसी के समय से देख रहा हूं। बहुत अच्छे संत हैं। भले, अच्छे विनयवान, अच्छी निष्ठा रखने वाले संत हैं। मुझसे रत्नाधिक हैं, मैं उन्हें यहीं से वंदन भी करता हूं और मंगलकामना भी करता हूं कि उनकी अच्छी साधना चलती रहे, आगम स्वाध्याय, जप आदि तथा जितना हो सके लोगों को संभालने की सेवा आदि कार्य चलता रहे। साधना में खूब अच्छा समय बीते। मैं मुनिश्री के प्रति मंगलकामना करता हूं।

साध्वी धनकुमारीजी (सरदारशहर) और साध्वी मानकुमारीजी (सरदारशहर) की दीक्षा के भी आज पचहत्तर वर्ष संपन्न हो रहे हैं, ऐसा ज्ञात हुआ है। इन दोनों वयोवृद्ध साध्वियों के प्रति भी मैं दूर बैठे-बैठे मंगलकामना करता हूं। खूब आगम स्वाध्याय चलता रहे, चित्त समाधि रहे, अच्छी साधना चले, जितना हो सके, धर्मसंघ की सेवा करती रहें।'

१५७वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा रचित गीत

शासन में, रमे रहें जिनशासन में।
जमे रहें जिनशासन में।
थमे रहें अनुशासन में।।
श्री भैक्षवगण पाया।
नन्दनवन उपमाया।
सुखद कल्पतरु छाया।

आत्मिक उत्थान खातिर गृहवास छोड़ा है।
सांसारिक संबंधनों से मनड़े को मोड़ा है।
आत्मविजेता हम बन पाएं।।१।

धर्म महावृक्ष का मूल विनय है।
विनयशील की सदा विजय है।
विनय धर्म को हम अपनाएं।।२।

निर्मल संयम पालन मानवजन्म की सुफलता।
कीर्ति-वर्ण-शब्द-श्लोक वांछा से हो मुक्तता।
मोक्ष प्राप्ति ही लक्ष्य हमारा।।३।।

सेवा सुभावना से चेतना सुभावित हो।
करुणा संवेदना से हृदय प्रभावित हो।
सेवा हमारा धर्म सुपावन।।४।।

जय जय भिक्षु शासन जय मर्यादा।
गुणवत्ता ही मुख्य हो संख्या भी हो ज्यादा।
नव पीढ़ी को हम विकसाएं।।५।।

वीर भिक्षु जय तुलसी महाप्रज्ञ गुरुवर।
मर्यादाओं का महोत्सव रायपुर में प्रवर।
'महाश्रमण' हम बढते जाएं।।६।।

लय : इं तन रो, पल रो भरोसो नहीं, इं तन रो ...

सेवाकेन्द्रों में सेवादायी साधु-साध्वियों की नियुक्तियां

लाडनूं सेवाकेन्द्र	साध्वी प्रज्ञावतीजी
बीदासर समाधिकेन्द्र	साध्वी कार्तिकयशाजी
गंगाशहर सेवाकेन्द्र	साध्वी पावनप्रभाजी
श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र	साध्वी गुप्तिप्रभाजी, साध्वी परमयशाजी
हिसार उपसेवाकेन्द्र	साध्वी कुन्दनरेखाजी
छापर सेवाकेन्द्र	मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल)
जैन विश्व भारती, लाडनूं सेवाकेन्द्र	मुनि अमृतकुमारजी

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित विहार-चतुर्मास

साध्वी कनकरेखाजी	उदासर-बीकानेर की ओर
साध्वी धनश्रीजी	राजलदेसर
साध्वी बसन्तप्रभाजी	सुजानगढ़ की ओर
साध्वी प्रतिभाश्रीजी	भीनासर आ जाएं
साध्वी मधुरेखाजी	रतनगढ़
साध्वी मंगलप्रभाजी	चूरू
मुनिश्री विजयकुमारजी	नोहर
साध्वी संघप्रभाजी	तारानगर-सादुलपुर की ओर
साध्वी सुमनश्रीजी	चूरू जिले की ओर
साध्वी विद्यावतीजी प्रथम (श्रीडूंगरगढ़)	चूरू जिले की ओर
साध्वी मानकुमारीजी (सरदारशहर)	चूरू जिले की ओर
साध्वी सूरजप्रभाजी	पड़िहारा आ जाएं
मुनि सुमतिकुमारजी	श्रीगंगानगर
साध्वी सत्यवतीजी	जोधपुर की ओर
साध्वी मंजुयशाजी	बालोतरा
मुनि राजकुमारजी	किशनगढ़
साध्वी कंचनकुमारीजी (लाडनूं)	हिसार-हांसी की ओर
साध्वी तिलकश्रीजी	हरियाणा की ओर
साध्वी कुन्थुश्रीजी	जीन्द की ओर
साध्वी संयमप्रभाजी (हांसी)	जाखलमण्डी-टोहाना की ओर
साध्वी लब्धिश्रीजी	गुजरात की ओर
मुनि हिमांशुकुमारजी	कच्छ की ओर
मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी	चेम्बूर-मुम्बई

साध्वी सोमलताजी	मध्यप्रदेश की ओर
मुनिश्री कमलकुमारजी	मध्यप्रदेश की ओर
मुनि जिनेशकुमारजी	केसिंगा
साध्वी स्वर्णरेखाजी	सॉल्टलेक, कोलकाता
साध्वी पीयूषप्रभाजी	फारबिसगंज
साध्वी संगीतश्रीजी	सिल्चर की ओर
साध्वी लावण्यश्रीजी	गांधीनगर, बेंगलुरु
साध्वी प्रमिलाकुमारीजी	बेंगलुरु की ओर
साध्वी कंचनप्रभाजी	राजराजेश्वरीनगर, बेंगलुरु
साध्वी मंगलप्रज्ञाजी	मैसूर की ओर
साध्वी पद्मावतीजी	गदग
साध्वी शिवमालाजी	कोप्पल
साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी	तमिलनाडु की ओर
मुनि अर्हतकुमारजी	मदुरै-तिरुपुर आदि क्षेत्रों की ओर
मुनि सुधाकरजी	तमिलनाडु की ओर
साध्वी चरितार्थप्रभाजी	गुजरात की ओर
साध्वी जिनरेखाजी	बृहत्तर हैदराबाद की ओर
साध्वी काव्यलताजी	बृहत्तर हैदराबाद की ओर
साध्वी मधुस्मिताजी	बृहत्तर हैदराबाद की ओर
साध्वी त्रिशलाकुमारीजी	विशाखापट्टनम
साध्वी लब्धिप्रभाजी	छोटीखाटू
मुनिश्री हर्षलालजी	भीलवाड़ा
मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी	भीलवाड़ा
मुनि सुरेशकुमारजी	भीलवाड़ा
मुनि कुलदीपकुमारजी	भीलवाड़ा
मुनि दर्शनकुमारजी	भीलवाड़ा
साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं)	भीलवाड़ा
साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़)	भीलवाड़ा
साध्वी जसवतीजी	भीलवाड़ा
साध्वी गुणमालाजी	भीलवाड़ा
साध्वी साधनाश्रीजी	भीलवाड़ा
साध्वी सोमयशाजी	भीलवाड़ा
साध्वी कमलप्रभाजी (बोरज)	भीलवाड़ा
साध्वी मधुबालाजी	भीलवाड़ा
साध्वी उर्मिलाकुमारीजी	भीलवाड़ा
साध्वी कुन्दनप्रभाजी	भीलवाड़ा
साध्वी जिनबालाजी	भीलवाड़ा
साध्वी शुभप्रभाजी	भीलवाड़ा
साध्वी संपूर्णयशाजी	भीलवाड़ा

समणीकेन्द्र

समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, समणी स्वर्णप्रज्ञाजी	लंदन
समणी चैतन्यप्रज्ञाजी, समणी हिमप्रज्ञाजी	मियामी
समणी सन्मतिप्रज्ञाजी, समणी जयंतप्रज्ञाजी	न्यूजर्सी
समणी मलयप्रज्ञाजी, समणी नीतिप्रज्ञाजी	ह्यूस्टन

भिन्न सामाचारी में वाहन प्रयोग का प्रायश्चित्त

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने विक्रम संवत २०७६ की माघ शुक्ला सप्तमी के बाद से विक्रम संवत २०७७ माघ शुक्ला सप्तमी तक भिन्न सामाचारी में वाहन प्रयोग करने वाले साधु-साध्वियों को प्रायश्चित्त की निर्धारित विधि व्यवस्था के अनुसार एकमासिक छेद प्रायश्चित प्रदान किया है। साधु-साध्वियों के नाम और उनके लिए पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं-

१. मुनि मणिलालजी (सरदारशहर)	६४५	एकमासिक छेद	पूर्ववर्ती सहित कुल पंचमासिक छेद
२. मुनि कुमुदकुमारजी (जोधपुर)	७७५	एकमासिक छेद	
३. साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं)	१२२६	एकमासिक छेद	पूर्ववर्ती सहित कुल द्विमासिक छेद
४. साध्वी सुव्रतांजी (श्रीडुंगरगढ़)	१२७६	एकमासिक छेद	पूर्ववर्ती सहित कुल द्विमासिक छेद
५. साध्वी ललितप्रभाजी (सरदारशहर)	१३२०	एकमासिक छेद	
६. साध्वी करुणाश्रीजी (सुजानगढ)	१३२६	एकमासिक छेद	पूर्ववर्ती सहित कुल द्विमासिक छेद
७. साध्वी सरस्वतीजी (हांसी)	१३५८	एकमासिक छेद	
८. साध्वी सुमनप्रभाजी (श्रीडूंगरगढ़)	१३६५	एकमासिक छेद	
९. साध्वी प्रमोदश्रीजी (पंचपदरा)	१३७३	एकमासिक छेद	
१०. साध्वी कनकरेखाजी (श्रीडूंगरगढ़)	१३८३	एकमासिक छेद	
११. साध्वी राकेशकुमारीजी (बायतू)	१३८७	एकमासिक छेद	
१२. साध्वी कुशलप्रज्ञाजी (सुजानगढ़)	१४४५	एकमासिक छेद	
१३. साध्वी विनयप्रभाजी (सरदारशहर)	१४६७	एकमासिक छेद	पूर्ववर्ती सहित कुल त्रैमासिक छेद
१४. साध्वी सुदर्शनाश्रीजी (सरदारशहर)	१४९२	एकमासिक छेद	
१५. साध्वी पुनीतप्रभाजी (टिटिलागढ़)	१५०५	एकमासिक छेद	
१६. साध्वी ऋजुबालाजी (सरदारशहर)	१५५३	एकमासिक छेद	
१७. साध्वी सरसप्रभाजी (बालोतरा)	१६१२	एकमासिक छेद	पूर्ववर्ती सहित कुल त्रैमासिक छेद
१८. साध्वी मल्लिकाश्रीजी (फतेहगढ़)	१६२२	एकमासिक छेद	
१९. साध्वी विनीतयशाजी (सुजानगढ़)	१६२९	एकमासिक छेद	
२०. साध्वी संकल्पप्रभाजी (बालोतरा)	१६७७	एकमासिक छेद	
२१. साध्वी सिद्धातश्रीजी (माडका)	१६९१	एकमासिक छेद	
२२. साध्वी समाधिप्रभाजी (उचानामंडी)	१७३२	एकमासिक छेद	
२३. स्व.साध्वी सागरप्रभाजी (चूरू)	१८१२	एकमासिक छेद	
२४. साध्वी माधुर्यप्रभाजी (कालू)	१८१५	एकमासिक छेद	

यदि कोई नाम अथवा भिन्न सामाचारी काल अवशिष्ट रह गया हो तो वे यथाशीघ्र पूज्यप्रवर से प्रायश्चित्त प्रदान करने की प्रार्थना करें और यदि कोई नाम अतिरिक्त आ गया हो तो वे यथाशीघ्र आचार्यप्रवर से निवेदन करवाएं, आवश्यक संशोधन किया जा सकेगा।

पूज्यप्रवर ने विज्ञप्ति वर्ष २२ अंक ४६ में प्रकाशित सूची में साध्वी नन्दिताश्रीजी (जसोल) १७२३ का छेद निरस्त किया है अर्थात् छेद नहीं आया माना है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण रायपुर की ओर

६ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बाबू कोहका से मरकाटोला की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती चारामा गांव के जैन समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। बताया गया कि चारामा में तेरह जैन परिवार निवासित हैं। आचार्यप्रवर ने एक शोक संतप्त परिवार के निवास स्थल में पधारकर उसे संबल प्रदान किया। चारामा गांव में ही साध्वी त्रिशलाकुमारीजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। करीब तीन वर्षों बाद गुरुदर्शन कर साध्वियां प्रफुल्लित थीं। शासकीय प्राथमिक विद्यालय-चारामा के विद्यार्थी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ अपने विद्यालय के समीप खड़े थे। आचार्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थामकर उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब १४.८ कि.मी. का विहार कर मरकाटोला में स्थित शासकीय प्राथमिक शाला में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री धीरजसिंह आदि ने आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जनता को धर्मार्जित व्यवहार की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत प्रस्तुत किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा-'आज साध्वी त्रिशलाकुमारीजी का सिंघाड़ा करीब तीन वर्षों के बाद मिला है। ओड़िशा की एरिया में हमने विदा ली थी। अब छत्तीसगढ़ में मिलना हो गया। ये चार साध्वियां हैं। तीन वर्ष इस एरिया में रही हैं। स्वास्थ्य अच्छा रहे, खूब अच्छा कार्य करती रहें, धर्म के क्षेत्र में अपना पुरुषार्थ नियोजित करती रहें।'

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री धीरज सिंह ने कहा-'आचार्यश्री महाश्रमणजी का हमारे विद्यालय प्रांगण में पदार्पण हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है। आपने हमारे विद्यालय को कृतार्थ कर दिया।'

आज मरकाटोला के एसडीएम श्री अमित श्रीवास्तव ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

७ फरवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः मरकाटोला से लगभग १५.८ कि.मी. का विहार कर पुरूर में स्थित शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री एस.आर. राजपुरिया ने पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में ध्यान के महत्त्व और उसके प्रकारों की चर्चा की।

कार्यक्रम में स्थानीय सरपंच श्रीमती सुकीर्ति यादव ने कहा-'हमारे लिए अत्यंत खुशी और गौरव की बात है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे गांव में पधारे हैं। आपके पधारने से हमारा गांव कृतकृत्य हो गया, पवित्र हो गया। आपके दर्शन के लिए लोग तरसते हैं, किन्तु हमें यह मौका अनायास मिल गया। मैं आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन करती हूं।'

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री एस.आर. राजपुरिया ने कहा-'हमारे लिए यह बहुत ही सौभाग्य की बात है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपने शिष्यों के साथ पदार्पण हुआ है। मुझे जब यह जानकारी मिली कि आप हमारे विद्यालय में पधारेंगे, मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं अपने पूरे विद्यालय परिवार की ओर से आपका और आपकी पूरी अहिंसा यात्रा का अभिनंदन और स्वागत करता हूं।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने उपस्थित ग्रामवासियों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई। पूज्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा-'विद्यालय के विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ सत्संस्कारों का विकास हो। उन्हें कुछ योग-ध्यान का भी प्रशिक्षण प्राप्त हो।'

प्रिंसिपल श्री राजपुरिया ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया-'हमारे इस विद्यालय के मुख्य मंच पर राष्ट्रगान आदि के साथ अणुव्रत गीत भी अंकित है, जो प्रायः प्रतिदिन प्रार्थना में उच्चरित किया जाता है।'

प्यास बढ़ रही गुरुदर्शन की खड़ी बीच में रात

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी बासठ दिनों की पृथक् यात्रा सम्पन्न कर आगामी कल आचार्यप्रवर के दर्शन करेंगी। उन्होंने आज अपनी भावनाएं दो पद्यों के रूप में श्रीचरणों में प्रेषित कीं। जो इस प्रकार हैं--

अर्हम्

भंते!

प्यास बढ़ रही गुरुदर्शन की, खड़ी बीच में रात।
उड़कर पहुंच सकें चरणों में, है न प्रभो! औकात।।
बन पौरुष के प्रखर पुजारी, किया बहुत उपकार।
धर्मसंघ की आब बढ़ाई, जिनशासन शृंगार।।

७ फरवरी २०२१, आमदी **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

धन्य बनी धमतरी की धरती : शान्तिदूत के स्वागत में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

८ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः पुरुर से धमतरी की ओर प्रस्थित हुए। धमतरी में तेरापंथ धर्मसंघ की गुरुधारणा स्वीकार किया हुआ मात्र एक व्यक्ति है, किन्तु धमतरी के अन्य जैन समाज का उल्लास आज यह अहसास करा रहा था कि धमतरी में तेरापंथ समाज के पांच सौ परिवार निवासित हैं। आचार्यप्रवर की अगवानी में लोगों के समूह पहुंचते जा रहे थे। लोगों की विशाल उपस्थिति उनकी वेशभूषा, प्रसन्नमुखाकृति, स्थान-स्थान पर लगे जैन ध्वज, बैनर आदि वातावरण को महाश्रमणमय बनाए हुए थे। हर ओर आह्लाद का माहौल दिखाई दे रहा था। जैनेतर समाज के लोग भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के स्वागत में उपस्थित थे। इस अवसर पर आसपास के क्षेत्रों के लोग भी सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित थे।

धमतरी के सांसद श्री मुन्नीलाल साहू, विधायक श्रीमती रंजना साहू, महापौर श्री विजय देवानंद सहित कई पार्षदों ने भी पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। साहू समाज, मराठा समाज, राजस्थानी सोनी समाज, सिन्हा समाज, देवांगन समाज, यादव समाज, ब्राह्मण समाज, अंजुमन इस्लामिया कमेटी, प्रेस क्लब, सर्व हिन्दू समाज, भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, गुजराती समाज, धीवर समाज, सिक्ख समाज, सिंधी समाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, दिगम्बर जैन समाज, मूर्तिपूजक जैन समाज, वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ, विश्व हिन्दू परिषद, माहेश्वरी समाज, अग्रवाल समाज आदि समाजों/संस्थाओं/संगठनों से संबंधित विभिन्न समूहों ने स्थान-स्थान पर पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

मूर्तिपूजक आम्नाय की साध्वी मनोहरश्रीजी की शिष्या साध्वी लयस्मिताजी आदि ठाणा-५ ने भी मार्ग में पूज्यप्रवर से भेंट की। आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उनका अभिवादन स्वीकार किया। इस प्रकार सबके श्रद्धाभावों को स्वीकार करते हुए पूज्यप्रवर करीब ६ कि.मी. का विहार संपन्न कर धमतरी में पधारे। पूज्यप्रवर का द्विदिवसीय धमतरी प्रवास यहीं हुआ।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने किए गुरुदर्शन

प्रवास स्थल के बाहर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। करीब ६२ दिनों की पृथक् यात्रा के बाद गुरुदर्शन कर साध्वियां आह्लादित थीं। साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'गुरुदर्शन के लिए इंतजार करते-करते बासठ दिन हो गए।' पूज्यप्रवर प्रवास स्थल में पधारकर हॉल में आसीन हुए। साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पाक्षिक खमतखामणा किए।

आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों से सुखपृच्छा की। साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया--'गुरुदेव की कृपा से सबके साता है। गुरुदेव का प्रताप हमारे साथ चल रहा था।' उन्होंने आचार्यप्रवर से सुखसाता पूछते हुए कहा--'आचार्यप्रवर की यात्रा कठिन थी, किन्तु बहुत सुफल और प्रभावक रही। आचार्यश्री सबके आचार्य बन गए, जन-जन के आचार्य बन गए। पचास हजार किलोमीटर की पदयात्रा की संपन्नता के अवसर

से हम वंचित रह गए।' साध्वीप्रमुखाजी के साथ समागत साध्वियों ने गीत के माध्यम से गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का शुभारम्भ

आज से परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में वर्धमान महोत्सव के साथ धमतरीवासियों द्वारा आचार्यप्रवर के स्वागत तथा साध्वीप्रमुखाजी के गुरु सन्निधि में पदार्पण के संदर्भ में भी उपक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम में जैन समाज के बच्चों द्वारा पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रस्तुति दी गई। जैन संघ महिला मंडल की महिलाओं ने गीत के माध्यम से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। संकल जैन संघ के सचिव श्री आकाश गोलछा, श्री हर्ष मेहता, श्री मुकेश संचेती और जगदलपुर के विधायक श्री रेखचंद जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। धमतरी की महिलाओं ने सोलह सतियों पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

स्थानीय विधायक श्रीमती रंजना साहू ने कहा--'आज हम सबका सौभाग्य है कि धमतरी की इस पवित्र धरा पर सद्गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। मुझे मार्ग में भी आपका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। हे सद्गुरुदेव! मैं अपना आंचल फैलाकर समस्त धमतरी की सुख-समृद्धि और विकास के लिए आशीर्वाद की याचना करती हूं। आपका मेरी जन्मभूमि और कर्मभूमि में पदार्पण मेरे जीवन का अविस्मरणीय और अमूल्य अवसर है।'

धमतरी के महापौर श्री विजय देवांगन ने कहा--'हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है कि धर्मनगरी धमतरी में परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। मैं समस्त धमतरीवासियों की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। आपके चरणकमलों के स्पर्श से हमारा शहर पवित्र हो गया, धन्य हो गया। आपका आशीर्वाद संपूर्ण धमतरी शहर और धमतरी के प्रत्येक नागरिक पर बना रहे। आपके चरणों में शत-शत नमन।'

धमतरी के पूर्व विधायक श्री इन्द्रचंद चौपड़ा ने कहा--'विश्वसंत, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का इतने साधु-साध्वियों को लेकर पधारना हमारे शहर धमतरी के लिए अहोभाग्य की बात है। छत्तीसगढ़ की धरा महान है। श्रीराम ने यहां विचरण किया, माता कौशल्या ने यहां जन्म लिया और इसी धरा पर आपने पचास हजार किलोमीटर की यात्रा सम्पन्न की। धमतरी का पुराना नाम 'धर्मतराई' था। आपने यहां पधारकर इस नाम को सार्थक कर दिया। हम सभी धमतरीवासी आपके दर्शन कर धन्य हो गए।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में वर्धमान महोत्सव के संदर्भ में 'वर्धमान' शब्द की व्याख्या करते हुए ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के क्षेत्र में बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'वर्धमान महोत्सव के साथ साधु-साध्वियों की संख्यावृद्धि का प्रसंग भी जुड़ा हुआ है। इस बार वर्धमान महोत्सव बड़े रूप में हो गया, क्योंकि साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां आज मिल गईं। मेरा मानना है कि जिनकी मंजिल एक हो और प्रस्थान का स्थान भी एक हो, उनमें क्षेत्रतः ज्यादा दूरी नही ंहो सकती। बोलारम से हम प्रस्थित हुए और साध्वीप्रमुखाजी ने भी प्रस्थान किया। हमारी मंजिल एक थी, किन्तु मार्ग की भिन्नता थी। आज मंजिल प्राप्त हो गई, मार्ग की भिन्नता मिट गई। आज ६२ दिनों और ६३ रात्रियों के बाद साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां मिली हैं।

साध्वीप्रमुखाजी नागपुर के निकट से होते हुए पधारी हैं और हम लोग तेलंगाना के बाद आंध्रप्रदेश और फिर छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग से होते हुए आए हैं। करीब तैंतीस रात्रियों का हमारा प्रवास बस्तर संभाग में रहा। बस्तर संभाग के अनेक जिलों में जाना हुआ। गीदम, जगदलपुर, कोंडागांव, केशकाल आदि-आदि क्षेत्रों में होते-होते आज हमारा धमतरी में आना हुआ है। धमतरी में साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों से हमारा मिलन हुआ है। मार्ग भिन्नता आज मंजिल में परिणत हो गई तो क्षेत्रीय दूरी दूर हो गई।

साध्वीप्रमुखाजी इतने दिन पृथक् मार्ग से यात्रा कर रही थीं। मुख्यमुनि आदि संत तो हमारे साथ में थे ही, मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीवर्या आदि साध्वियां भी हमारे साथ थीं। यात्रा का पथ किसी रूप में विकट

था। आरोह-अवरोह भी आया। हालांकि मैंने साध्वीप्रमुखाजी को भी साथ रखने का ही निर्णय किया था, किन्तु बाद में चिन्तन आया कि कुछ पहाड़ी मार्ग है। इसलिए उस रास्ते को साध्वीप्रमुखाजी के लिए उपयुक्त नहीं माना गया तो मैंने साध्वीप्रमुखाजी को पृथक् मार्ग से पधारने का इंगित दिया। साध्वीप्रमुखाजी की पृथक् यात्रा होने से साध्वियों के कुछ सुविधा हो गई होगी, क्योंकि बड़ों का साथ मिल जाने से रास्ता आसानी से पार हो सकता है। एक साथ इतनी संख्या बढ़ गई तो वर्धमान महोत्सव संख्या की दृष्टि से साकार हो गया। जो काम कभी-कभी राजस्थान में भी नहीं होता, वह धमतरी में हो गया कि एक साथ सैंतालीस साध्वियों की संख्या बढ़ गई।'

आज मैं धमतरी में आया। धमतरी के कितने वर्गों/समाजों के लोग समूहबद्ध खड़े थे। हमारा उनसे मिलना हुआ तो मानों सद्भावना साकार हो गई। हम लोग जैन हैं और सिक्ख, मुस्लिम आदि जो जैन नहीं, वे भी हमसे मिल रहे थे, तो व्यवहार के संदर्भ में ऐसा लग रहा था कि सद्भावना मूर्तिमान हो रही थी। जैन समाज के विभिन्न संप्रदायों के लोग भी मार्ग में हमसे मिले। राजनीति से जुड़े हुए लोग भी मिले, अभी उनके स्वागत वक्तव्य भी हुए। स्थानीय विधायक, पूर्व विधायक और महापौर सहित बड़ी संख्या में उपस्थित धमतरीवासियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं।

बासठ वासर बाद फला है आज भाग्य मन्दार

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'साधु-संन्यासी लोग निरंतर परमात्मा का स्मरण करते हैं, हंस मान सरोवर को याद करते हैं, हाथी सल्लकी वन वाली रेवा नदी को याद करते हैं, वैसे ही हम आचार्यप्रवर आपको निरंतर याद करते रहे। आज का यह धमतरी का दिन हमारे लिए धन्य है कि हमने आपके दर्शन प्राप्त किए। जैसा कि अभी परम पूज्य आचार्यप्रवर ने फरमाया कि बोलारम से हमने परम पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से मंगलपाठ सुनकर और मंगल आशीर्वाद लेकर प्रस्थान किया। आज बासठ दिनों बाद गुरुचरणों में पहुंचे हैं। यह गुरुदेव का आशीर्वाद ही मानना चाहिए कि गुरुदेव के निर्देशानुसार हमारी यह यात्रा निर्विघ्न पूरी हुई।

हमने आचार्यप्रवर की यात्रा के संवाद सुने। यह यात्रा इतनी प्रभावक थी कि कभी-कभी मन में आता कि हम इस प्रभावक यात्रा को देखने से वंचित रह गए। आचार्य तुलसी ने एक बार फरमाया था कि महापुरुष कहीं जाते हैं तो दो चीजें कार्य करती हैं--अदृश्य चक्र और उनका ओज व तेज। मैं ऐसा अनुभव करती हूं कि इस यात्रा में आचार्यप्रवर का ओज व तेज आचार्यप्रवर के साथ था, इसलिए यह जटिल यात्रा, घाटियों की यात्रा इतनी प्रभावक रही कि सचमुच ही एक नया इतिहास बन गया। आचार्यप्रवर का अदृश्य चक्र हमारे साथ था, आचार्यप्रवर का प्रताप हमारे साथ था, इसलिए हमारी यात्रा भी बहुत अच्छे ढंग से हुई। आचार्यप्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए श्रावक समाज ने रास्ते में अच्छी व्यवस्था की। हैदराबाद, नागपुर, रायपुर और राजनांदगांव के कार्यकर्ताओं ने स्थान की इतनी अच्छी व्यवस्था की कि सतियों के इतने ठाणे होने के बावजूद स्थान की कहीं कमी नहीं आई। हमारी यात्रा वाले क्षेत्रों में भी तेरापंथी परिवार कम थे, किन्तु वहां के अन्य जैन परिवारों और जैनेतर परिवारों में उत्साह बहुत था। सभी क्षेत्रों के लोगों की प्रार्थना रही कि आप आचार्यप्रवर को हमारे क्षेत्र में पधारने के लिए निवेदन करें।

आज हम धमतरी में भी देख रहे हैं कि यहां के लोगों में कितना उत्साह है। धमतरी के लिए कहा जाता है कि यह धर्म की नगरी है। आज यहां धर्म का जीवंत अवतरण हो गया है, ऐसा अनुभव हो रहा है। ऐसा लग रहा है कि छत्तीसगढ़ का वातावरण ही अभी धर्ममय बन रहा है जो जैनेतर लोग जैन धर्म को नहीं जानते, वे भी चाहते हैं कि आचार्यप्रवर उनके क्षेत्र में आएं और उनका पथदर्शन करें।

आज हमें आचार्यप्रवर के दर्शन कर जो प्रसन्नता हुई है, उसे मैं शब्दों में कैसे बताऊं, क्योंकि शब्दों में वह ताकत नहीं है कि वे भावों को अभिव्यक्ति दे सकें, लेकिन शब्दों के सिवाय और कोई प्रसन्नता की अभिव्यक्ति का साधन भी नहीं है। आचार्यप्रवर के दर्शन कर आज हम धन्य हो गए। हमें ऐसा लग रहा है कि आज हम अपने घर में आ गए हैं। कुछ पद्यों के माध्यम से मैं अपने भावों को अभिव्यक्त कर रही हूं--

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2021-23 Wed.-Thu.
L.No.-U(C)-200/2021-23
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

अर्हम्

ज्योतिचरण श्री महाश्रमण को वंदन शत-शत बार।
बासठ वासर बाद फला है आज भाग्य-मन्दार।।
ज्योतिचरण की शरण शुभंकर श्रेयस्कर सुखकार।।

वो ही सूरज वे ही तारे नभ में वही शशांक,
पर मन तो सूना-सूना था देखो भीतर झांक,
दर्शन पाते ही प्राणों को ऊर्जा मिली अपार।।१।।

कल्पवृक्ष आर्हत्वाङ्मय में हैं दसविध विख्यात,
इस कलियुग में सुगुरु हमारे हैं सुरतरु साक्षात,
हो जाता है शरणागत का हर सपना साकार।।२।।

ऊबड़-खाबड़ पथ की यात्रा की तुमने स्वीकार,
पार हो गई विकट घाटियां दो-दो किए विहार,
सफर राजपथ से करने का दिया हमें उपहार।।३।।

जंह-जंह चरण टिकाए तुमने खिला वहां मधुमास,
मोड़-मोड़ पर दीप जलाए फैला दिव्य उजास,
है उपकार अनंत तुम्हारा हो कैसे इजहार।।४।।

क्षेत्र अछूते जो श्रद्धा के कर उनकी संभाल,
बरसाया पीयूष वहां पर जनता हुई निहाल,
नैतिकता की ज्योति जलाई करने जन-उद्धार।।५।।

नक्सलवादी बीहड़ पथ से दिया शांति-संदेश,
लक्ष्य एक ही नामशेष हो हिंसा का संक्लेश,
सद्भावों का सिंचन पाकर आई नई बहार।।६।।

अतिशायी आभामंडल का वर्धमान अनुभाव,
हर मौसम में निखर रहा है नैसर्गिक समभाव,
समय-नियोजन देख तुम्हारा विस्मित है संसार।।७।।

मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीवर्याजी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीप्रमुखाजी के साथ समागत साध्वियों ने गुरुदर्शन से प्राप्त अपनी प्रसन्नता को एक गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। आचार्यप्रवर के साथ जगदलपुर के मार्ग से समागत साध्वियों ने भी गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com
ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला